

5 10 वाइथा न प्रथिना प पर थकवनी पैरा हुं।
 (7) वाइथा ने प्रथिना थ पत्रा कर निर्वक विना
 कि वर उधमे वाइ को सुगो नही चनाग
 चरही (वाइथा को परचाग श्री प्रथिना हेरे.
 ने को (वाइथा का प्रथिना प र्थिना विना
 जाकर असागीन थकवनी विना वथा (वाइथा
 विपने वाइ को सुगो नही चनाग चरही।
 उलाकोठे वाइथा का वाइ र्थिना विना जाग ही
 थकवनी थिपुन सुगो होकर सक्क ए वाइ
 र्थि वाइ वकनीन नक्क गच्छर ही।

कृष्णा देवी

9.4

कामलाम्